

THE BOARD STUDY

सूरदास के पद

अध्याय 1 • कक्षा 10 हिन्दी • क्षितिज भाग-2

पदों का भावार्थ • काव्य-सौंदर्य • NCERT के सभी 15 प्रश्न-उत्तर • Quick
Revision

NCERT 2026-27 • Exam-Oriented Premium Notes

Learn • Practice • Improve

अध्याय परिचय

“सूरदास के पद” कृष्ण-भक्ति काव्य की विरह-भावना, गोपियों के अनन्य प्रेम और उद्धव के निर्गुण-योग संदेश पर किए गए तीखे व्यंग्य को प्रस्तुत करते हैं। कृष्ण मथुरा चले गए हैं। वे गोपियों को समझाने के लिए उद्धव को ब्रज भेजते हैं, परंतु ज्ञान और योग का उपदेश उनके विरह को शांत करने के बजाय और तीव्र कर देता है।

केंद्रीय भाव: सच्चा प्रेम केवल तर्क या उपदेश से समाप्त नहीं होता। गोपियों के लिए कृष्ण जीवन का आधार हैं; इसलिए वे निर्गुण साधना की अपेक्षा सगुण, साकार और अनुभवपूर्ण प्रेम-भक्ति को श्रेष्ठ मानती हैं।

कवि परिचय

- **कवि:** सूरदास
- **काल:** भक्तिकाल की कृष्णभक्ति शाखा
- **आराध्य:** श्रीकृष्ण
- **प्रमुख रचनाएँ:** सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी
- **भाषा:** ब्रजभाषा
- **विशेषता:** कृष्ण की बाल-लीलाओं, वात्सल्य और गोपियों के विरह का अत्यंत मार्मिक चित्रण।

प्रसंग-मानचित्र

कृष्ण	उद्धव	गोपियाँ	परिणाम
मथुरा से संदेश भेजते हैं	योग और निर्गुण ज्ञान समझाते हैं	प्रेम और विरह की पीड़ा व्यक्त करती हैं	उपदेश पर व्यंग्य तथा प्रेम-भक्ति की विजय

परीक्षा संकेत: गोपियों के कथनों को सीधे अर्थ में न लें। उनमें उपालंभ, वक्रोक्ति और व्यंग्य प्रमुख हैं।

पद 1 - उद्धव पर व्यंग्य

**“ऊधो, तुम हों अति बड़भागी।”
“अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।”**

प्रसंग

गोपियाँ उद्धव के ज्ञान और योग से प्रभावित नहीं हैं। वे व्यंग्यपूर्वक उन्हें अत्यंत भाग्यवान कहती हैं, क्योंकि वे कृष्ण के निकट रहकर भी प्रेम के बंधन में नहीं बँधे।

सरल भावार्थ

गोपियाँ कहती हैं कि उद्धव सचमुच “बड़े भाग्यवान” हैं, क्योंकि उनके मन में किसी के प्रति प्रेम नहीं जागा। वे प्रेमरूपी धागे से अछूते हैं। जिस प्रकार कमल का पत्ता पानी में रहते हुए भी उससे नहीं भीगता और तेल की गगरी को पानी छू नहीं पाता, उसी प्रकार उद्धव कृष्ण के साथ रहते हुए भी उनके प्रेम में नहीं डूबे। इसके विपरीत गोपियाँ कृष्ण-प्रेम में पूरी तरह समर्पित हैं।

मुख्य बिंदु

- “बड़भागी” शब्द प्रशंसा नहीं, बल्कि तीखा व्यंग्य है।
- कमल-पत्र और तेल की गगरी से उद्धव की प्रेम-विहीन स्थिति समझाई गई है।
- गोपियों का प्रेम भावनात्मक, अनुभवपूर्ण और पूर्ण समर्पण वाला है।
- उद्धव का ज्ञान तर्कप्रधान है; गोपियों का मार्ग प्रेमप्रधान है।

काव्य-सौंदर्य

- भाषा: मधुर ब्रजभाषा।
- शैली: व्यंग्यात्मक और उपालंभपूर्ण।
- अलंकार: कमल-पत्र और तेल की गगरी के उदाहरणों में दृष्टांत और उपमा।
- रस: वियोग-श्रृंगार।

एक पंक्ति में: उद्धव कृष्ण के पास रहकर भी प्रेम से अछूते हैं, जबकि गोपियाँ कृष्ण-प्रेम में पूर्णतः डूबी हुई हैं।

पद 2 - मन की पीड़ा मन में रह गई

“मन की मन ही माँझ रही।”
“कहिए जाइ कौन पैं ऊधौं, नाही परत कही।”

प्रसंग

उद्धव गोपियों को कृष्ण को भूलकर योग-साधना करने का संदेश देते हैं। यह सुनकर गोपियाँ अपनी निराशा और विरह-वेदना व्यक्त करती हैं।

सरल भावार्थ

गोपियाँ कहती हैं कि उनके मन की बात मन में ही दबकर रह गई। वे कृष्ण के लौटने की आशा में विरह की पीड़ा सहती रही। उन्हें विश्वास था कि कृष्ण आएँगे और तब वे अपने हृदय की सारी बातें कहेंगी। किंतु कृष्ण स्वयं नहीं आए; उन्होंने उद्धव के हाथ योग का संदेश भेज दिया। इस संदेश ने उनकी विरह-अग्नि को शांत करने के बजाय और बढ़ा दिया।

मुख्य बिंदु

- गोपियों ने कृष्ण के लौटने की आशा को अपने जीवन का आधार बनाया था।
- योग-संदेश उनकी भावनाओं के प्रतिकूल है।
- विरह में आशा मनुष्य को पीड़ा सहने की शक्ति देती है।
- कृष्ण के न आने से गोपियों की मनोव्यथा और गहरी हो जाती है।

काव्य-सौंदर्य

- गोपियों की निराशा और विरह-वेदना का मार्मिक चित्रण।
- “मन की मन ही” में भाव की पुनरावृत्ति से पीड़ा की तीव्रता प्रकट होती है।
- भाषा सहज, भावपूर्ण और संगीतमय ब्रजभाषा है।
- वियोग-श्रृंगार रस की प्रधानता है।

एक पंक्ति में कृष्ण के आगमन की आशा टूटने और योग-संदेश मिलने से गोपियों की दबी हुई पीड़ा और बढ़ जाती है।

पद 3 - कृष्ण ही जीवन का आधार

“हमारैँ हरि हारिल की लकरी।”
“मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।”

प्रसंग

उद्धव के योग-संदेश के उत्तर में गोपियाँ स्पष्ट करती हैं कि वे कृष्ण को छोड़कर किसी अन्य साधना या आराध्य को स्वीकार नहीं कर सकती।

सरल भावार्थ

गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण उनके लिए हारिल पक्षी की लकड़ी के समान हैं। मान्यता है कि हारिल पक्षी अपने पंजों में पकड़ी लकड़ी को कभी नहीं छोड़ता। उसी प्रकार गोपियों ने मन, वचन और कर्म से नंदनंदन कृष्ण को दृढ़तापूर्वक हृदय में धारण कर रखा है। वे जागते, सोते और स्वप्न देखते समय भी कृष्ण का ही स्मरण करती हैं। इसलिए उद्धव का योग-संदेश उनके लिए कड़वी ककड़ी जैसा अरुचिकर है।

मुख्य बिंदु

- हारिल पक्षी की लकड़ी अटूट आश्रय और एकनिष्ठता का प्रतीक है।
- गोपियों का प्रेम मन, वचन और कर्म - तीनों से पूर्ण है।
- कृष्ण-स्मरण उनकी निरंतर मानसिक अवस्था बन चुका है।
- निर्गुण योग उन्हें इसलिए स्वीकार नहीं, क्योंकि उनका हृदय पहले ही सगुण कृष्ण को समर्पित है।

काव्य-सौंदर्य

- “हरि हारिल की लकरी” में प्रभावशाली रूपकात्मक तुलना।
- “मन, क्रम, बचन” में क्रमबद्धता और पूर्ण समर्पण का भाव।
- योग की तुलना कड़वी ककड़ी से कर उसकी अरुचिकरता दिखाई गई है।
- ब्रजभाषा, लोक-उपमान और वियोग-शृंगार का सुंदर समन्वय।

एक पंक्ति में: जैसे हारिल अपनी लकड़ी नहीं छोड़ता, वैसे ही गोपियाँ कृष्ण का आश्रय कभी नहीं छोड़ सकती।

पद 4 - “हरि हैं राजनीति पढ़ि आए”

“हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।”
“समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।”

प्रसंग

कृष्ण स्वयं ब्रज न लौटकर उद्धव के माध्यम से योग-संदेश भेजते हैं। इस व्यवहार से आहत गोपियाँ कृष्ण पर भी व्यंग्य करती हैं।

सरल भावार्थ

गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण ने मथुरा जाकर राजनीति सीख ली है। वे पहले ही चतुर थे, अब बड़े ग्रंथ पढ़कर और बुद्धिमान बन गए हैं। वे स्वयं आने के स्थान पर उद्धव के द्वारा योग-संदेश भेजते हैं और गोपियों का मन बदलने का प्रयास करते हैं। गोपियाँ इसे अन्याय मानती हैं: जो कृष्ण उनका मन अपने साथ ले गए, वे अब योग का उपदेश देकर उन्हें विरक्त होने को कहते हैं। राजा का धर्म प्रजा की रक्षा करना और उसे सताना नहीं है।

मुख्य बिंदु

- “राजनीति पढ़ि आए” में कृष्ण की बदलती व्यवहार-नीति पर व्यंग्य है।
- कृष्ण ने गोपियों का मन पहले ही अपने वश में कर लिया है।
- योग-संदेश भेजना गोपियों को विरोधाभासी और अन्यायपूर्ण लगता है।
- अंत में आदर्श राजधर्म की ओर संकेत किया गया है।

काव्य-सौंदर्य

- व्यंग्य, वक्रोक्ति और उपालंभ की प्रभावपूर्ण शैली।
- प्रेमी के व्यवहार को राजनीति से जोड़कर मौलिक भाव-व्यंजना।
- गोपियों की चतुराई, तर्कशीलता और भावुकता एक साथ उभरती है।
- सरल ब्रजभाषा में गहरा मनोवैज्ञानिक चित्रण।

एक पंक्ति में: गोपियाँ कृष्ण के योग-संदेश को प्रेम से बचने की चतुर राजनीतिक चाल मानती हैं।

समग्र काव्य-अध्ययन

सगुण प्रेम-भक्ति और निर्गुण योग

आधार	गोपियों की प्रेम-भक्ति	उद्धव का योग-ज्ञान
स्वरूप	साकार कृष्ण के प्रति अनुराग	निर्गुण ब्रह्म का चिंतन
साधन	स्मरण, समर्पण और प्रेम	वैराग्य, संयम और ज्ञान
अनुभव	हृदय और भावनाओं से जुड़ा	बुद्धि और तर्क से जुड़ा
गोपियों की दृष्टि	जीवन का सहज सत्य	कड़वी ककड़ी जैसा अरुचिकर

भाषा एवं शैली

- **ब्रजभाषा:** कोमल, मधुर और कृष्ण-भक्ति के लिए उपयुक्त।
- **उपालंभ शैली:** प्रिय के अनुचित व्यवहार की शिकायत।
- **व्यंग्य:** उद्धव को “बड़भागी” और कृष्ण को “राजनीति पढ़ा” बताना।
- **वक्रोक्ति:** बात को सीधे न कहकर चतुर ढंग से कहना।
- **लोक-उपमान:** कमल-पत्र, तेल की गगरी, हारिल की लकड़ी और कड़वी ककड़ी।

महत्वपूर्ण शब्दार्थ

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
बड़भागी	बहुत भाग्यवान	अपरस	अछूता
सनेह तगा	प्रेम का धागा	माँझ	अंदर
हारिल	एक पक्षी	लकरी	लकड़ी
क्रम	कर्म	अधार	आधार
मधुकर	भौरा; यहाँ उद्धव	मरजादा	मर्यादा

NCERT प्रश्न-अभ्यास

नोट: नीचे दिए गए सभी 12 प्रश्न NCERT क्षितिज भाग-2, अध्याय 1 के मूल प्रश्न-अभ्यास के क्रम में हैं।

प्रश्न 1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर

गोपियाँ उद्धव को वास्तव में भाग्यवान नहीं मानती। वे व्यंग्यपूर्वक कहती हैं कि उद्धव कृष्ण के पास रहते हुए भी उनके प्रेम से अछूते हैं। जैसे कमल का पत्ता जल में रहकर भी नहीं भीगता और तेल की गगरी पर जल की बूँद नहीं टिकती, वैसे ही उद्धव पर कृष्ण-प्रेम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

प्रश्न 2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?

उत्तर

उद्धव के व्यवहार की तुलना जल में रहने वाले कमल के पत्ते और जल में रखी तेल की गगरी से की गई है। दोनों जल के निकट रहकर भी उससे प्रभावित नहीं होते। इसी प्रकार उद्धव कृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रेम में नहीं डूबे।

प्रश्न 3. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर

गोपियों ने कमल-पत्र, तेल की गगरी, प्रेम-नदी, गुड़ से चिपकी चींटी, हारिल पक्षी की लकड़ी और कड़वी ककड़ी जैसे उदाहरणों से उद्धव को उलाहने दिए हैं। इन उदाहरणों से वे उद्धव की प्रेमहीनता तथा अपने अटूट कृष्ण-प्रेम को स्पष्ट करती हैं।

प्रश्न 4. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर

गोपियाँ कृष्ण के लौटने की आशा में विरह-वेदना सह रही थीं। उन्हें विश्वास था कि कृष्ण लौटेंगे और उनकी पीड़ा दूर होगी। किंतु कृष्ण स्वयं आने के स्थान पर उद्धव के हाथ योग और वैराग्य का संदेश भेज देते हैं। इस संदेश से उनकी आशा टूट जाती है और विरह की पीड़ा शांत होने के बजाय और तीव्र हो जाती है।

प्रश्न 5. 'मरवादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर

गोपियाँ अब तक कृष्ण के लौटने की आशा में अपने प्रेम और विरह को मन में दबाकर धैर्य रखे थीं। योग-संदेश सुनकर उनका धैर्य टूट गया। वे लोकलाज और संकोच की मर्यादा छोड़कर अपने प्रेम, पीड़ा और शिकायत को खुलकर व्यक्त करने लगीं।

प्रश्न 6. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर

गोपियों ने कृष्ण को हारिल पक्षी की लकड़ी के समान अपना एकमात्र आधार बताया है। उन्होंने मन, वचन और कर्म से कृष्ण को हृदय में दृढ़ता से धारण किया है। वे जागते, सोते, स्वप्न में तथा दिन-रात केवल कृष्ण का स्मरण करती हैं। उनका प्रेम अटूट, एकनिष्ठ और पूर्ण समर्पण वाला है।

प्रश्न 7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उत्तर

गोपियों ने कहा कि योग की शिक्षा उन लोगों को दी जाए जिनका मन स्थिर नहीं है और जो चंचल होकर इधर-उधर भटकते रहते हैं। जिनका मन पहले ही कृष्ण में एकाग्र है, उन्हें योग-साधना की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न 8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग-साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर

गोपियों को निर्गुण योग-साधना नीरस, कठिन और अरुचिकर लगती है। वे उसे कड़वी ककड़ी के समान मानती हैं। उनका मन सगुण और साकार कृष्ण के प्रेम में पूरी तरह डूबा है; इसलिए ज्ञान, वैराग्य और निर्गुण ब्रह्म का उपदेश उन्हें स्वीकार नहीं। उनके लिए प्रेम-भक्ति ही सच्ची साधना है।

प्रश्न 9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

उत्तर

गोपियों के अनुसार राजा का धर्म प्रजा की रक्षा करना, उसका हित करना और न्यायपूर्वक शासन करना है। राजा को अपनी प्रजा को किसी प्रकार सताना नहीं चाहिए।

प्रश्न 10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं?

उत्तर

गोपियों को लगता है कि मथुरा जाकर कृष्ण पहले से अधिक चतुर और नीतिज्ञ हो गए हैं। वे स्वयं लौटने के बजाय योग-संदेश भेज रहे हैं और प्रेम निभाने के स्थान पर विरक्ति सिखा रहे हैं। इस बदले हुए व्यवहार से गोपियाँ व्यंग्य करती हैं कि कृष्ण अब उनका वह मन लौटा दें जिसे वे ब्रज से जाते समय चुरा ले गए थे।

प्रश्न 11. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर

गोपियों की वाणी में सहजता, तर्कशीलता, व्यंग्य, वक्रोक्ति, उपालंभ और लोक-अनुभव का सुंदर मेल है। वे उद्धव को “बड़भागी” कहकर उलटी प्रशंसा करती हैं, कमल-पत्र और तेल की गगरी जैसे सटीक उदाहरण देती हैं, योग को कड़वी ककड़ी बताती हैं और कृष्ण के व्यवहार को राजनीति से जोड़ती हैं। उनके प्रत्येक तर्क के पीछे गहरा प्रेम और प्रत्यक्ष अनुभव है; इसलिए ज्ञानी उद्धव निरुत्तर हो जाते हैं।

प्रश्न 12. संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए सूर के भ्रमरगीत की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर

सूर के भ्रमरगीत में गोपियों का अनन्य कृष्ण-प्रेम, विरह-वेदना और सगुण भक्ति की श्रेष्ठता व्यक्त हुई है। ज्ञान-योग पर प्रेम-भक्ति की विजय दिखाई गई है। गोपियों की वाग्विदग्धता, व्यंग्य, वक्रोक्ति और उपालंभ शैली अत्यंत प्रभावशाली है। ब्रजभाषा मधुर और भावपूर्ण है तथा कमल-पत्र, तेल की गगरी, हारिल की लकड़ी और कड़वी ककड़ी जैसे लोक-उपमान पदों को सजीव बनाते हैं।

NCERT रचना और अभिव्यक्ति

नोट: ये प्रश्न NCERT पुस्तक में प्रश्न 13 से 15 के रूप में दिए गए हैं।

प्रश्न 13. गोपियों ने उद्धव के सामने तरह-तरह के तर्क दिए हैं, आप अपनी कल्पना से और तर्क दीजिए।

उत्तर

गोपियाँ यह भी कह सकती थीं—उद्धव! प्रेम कोई वस्त्र नहीं जिसे इच्छा होते ही बदल दिया जाए। जिस मन में कृष्ण बस चुके हैं, उसी मन से निर्गुण ब्रह्म का ध्यान कैसे करें? योग मन को एकाग्र करना सिखाता है, पर हमारा मन तो पहले ही कृष्ण में पूर्णतः एकाग्र है। अतः हमें योग सिखाने के बजाय कृष्ण को अपने वचन और प्रेम का पालन करना चाहिए।

प्रश्न 14. उद्धव ज्ञानी थे, नीति की बातें जानते थे; गोपियों के पास ऐसी कौन-सी शक्ति थी जो उनके वाक्चातुर्य में मुखरित हो उठी?

उत्तर

गोपियों के पास कृष्ण के प्रति सच्चे, अनन्य और अनुभूत प्रेम की शक्ति थी। उनका ज्ञान पुस्तकों से नहीं, प्रेम और विरह के प्रत्यक्ष अनुभव से उत्पन्न हुआ था। यही प्रेम-शक्ति उनकी बुद्धि, तर्क, व्यंग्य और वाणी में मुखरित हुई और उन्होंने ज्ञानी उद्धव को निरुत्तर कर दिया।

प्रश्न 15. गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नज़र आता है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर

कृष्ण ने ब्रज लौटने और प्रेम निभाने के स्थान पर उद्धव के माध्यम से योग-संदेश भेजा। गोपियों को यह व्यवहार चतुराई, टाल-मटोल और अपने दायित्व से बचने जैसा लगा; इसलिए उन्होंने कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं। समकालीन राजनीति में भी कई बार नेता बड़े वादे करते हैं, पर समय आने पर सीधे उत्तर देने के बजाय प्रतिनिधियों, संदेशों या नए तर्कों के माध्यम से बात टाल देते हैं। जब कथनी और करनी में अंतर दिखाई देता है, तब गोपियों का यह व्यंग्य आज भी सार्थक लगता है।

Quick Revision

- **कवि:** सूरदास - भक्तिकाल की कृष्णभक्ति शाखा के प्रमुख कवि।
- **भाषा:** ब्रजभाषा।
- **प्रमुख रस:** वियोग-श्रृंगार।
- **प्रसंग:** कृष्ण के भेजे योग-संदेश पर गोपियों की प्रतिक्रिया।
- **पद 1:** उद्धव कृष्ण के पास रहकर भी प्रेम से अछूते हैं।
- **पद 2:** कृष्ण के लौटने की आशा टूटने से मन की बात मन में रह जाती है।
- **पद 3:** कृष्ण गोपियों के लिए हारिल की लकड़ी की तरह अटूट आधार हैं।
- **पद 4:** गोपियाँ कृष्ण की बदलती नीति और योग-संदेश पर व्यंग्य करती हैं।
- **गोपियों का मार्ग:** सगुण, साकार और प्रेमपूर्ण भक्ति।
- **उद्धव का मार्ग:** निर्गुण ब्रह्म, ज्ञान, योग और वैराग्य।
- **प्रमुख शैली:** व्यंग्य, वक्रोक्ति और उपालंभ।
- **लोक-उपमान:** कमल-पत्र, तेल की गगरी, हारिल की लकड़ी और कड़वी ककड़ी।
- **मुख्य संदेश:** सच्चा और अनन्य प्रेम केवल तर्क या उपदेश से समाप्त नहीं किया जा सकता।